बाल राम कथा

‘अवधपुरी में राम’

(मॉड्यूल–2/2)

मुख्य कथावस्तु भाग-2

यहाँ पर विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री या अध्ययन सामग्री के सम्यक अवबोधन तथा अर्थावबोधन के लिए इस पाठ (अवधपुरी में राम) को दो भागों में विभाजित किया गया है। भाग–1 की विषयवस्तु को मॉड्यूल–1 में सम्यक्तया परिभाषित किया गया है। अब यहाँ हम भाग–2 का अध्ययन करेंगे। भाग–2 की कथावस्तु से संबंधित प्रश्नोत्तर तथा कठिन शब्दार्थों का भी उल्लेख किया गया है। मुख्य कथा के भाग–2 की कथावस्तु इस प्रकार है।

अयोध्या का राजमहल। एक दिन ऐसी ही चर्चा चल रही थी। गहन मंत्रणा। तभी एक द्वारपाल घबराया हुआ अंदर आया। उसने सूचना दी कि महर्षि विश्वामित्र पधारे हैं। महाराज दशरथ तत्काल अपना आसन छोड़कर खड़े हो गए। द्वार की ओर बढ़े। महर्षि की अगवानी करने। उन्हें लेकर दरबार में आए। विश्वामित्र को ऊंचा आसन दिया गया। विश्वामित्र कभी स्वयं राजा थे। बहुत बड़े और बलशाली। बाद में अपना राजपाट छोड़ दिया। सन्यास ग्रहण कर लिया। जंगल चले गए। वहीं उन्होंने अपना आश्रम बनाया। उसे उन्होंने सिद्धाश्रम नाम दिया।

शब्दार्थ- गहन= गंभीर/विशेष, मंत्रणा= विचार= विमर्श/चर्चा, अगवानी= स्वागत, आश्रम= साधु संतों के रहने का स्थान।

महर्षि के स्वागत सत्कार के बाद दशरथ ने कहा, “महर्षि, आज्ञा दें, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ। आप अपने मन की बात कहिए। आपकी आज्ञा का पूरी तरह पालन होगा।” “राजन! मैं जो मांगने जा रहा हूँ उसे देना आपके लिए कठिन होगा।” “आप आज्ञा दीजिए, महर्षि! मैं उसे पूरा करने के लिए तत्पर हूँ। बिल्कुल नहीं हिचकूंगा।” “मैं सिद्धि के लिए एक यज्ञ कर रहा हूँ। अनुष्ठान लगभग पूरा हो गया है। लेकिन दो राक्षस उसमें बाधा डाल रहे हैं। मैं जानता हूँ कि उन राक्षसों को केवल एक ही व्यक्ति मार सकता है। वह राम है। आप अपने ज्येष्ठ पुत्र को मुझे दे दें ताकि यज्ञ पूरा हो,” विश्वामित्र ने कहा।

शब्दार्थ– हिचकूंगा= मन का डर, सिद्धि= सफलता, अनुष्ठान= धार्मिक कृत्य, बाधा= रूकावट, ज्येष्ठ= बड़ा।

दशरथ पर जैसे बिजली गिर पड़ी। वह अचकचा गए। उन्हें उम्मीद ही नहीं थी कि मुनिवर उनसे राम को मांग लेंगे। उनके जेष्ठ पुत्र। उनके सबसे प्रिय। दशरथ चिंता में पड़ गए। विश्वामित्र दशरथ की दुविधा समझ रहे थे। उन्होंने कहा, "मैं राम को केवल कुछ दिनों के लिए मांग रहा हूँ। यज्ञ दस दिन में संपन्न हो जाएगा।" महाराज दशरथ दुखी हो गए। पुत्र वियोग की आशंका से कांप उठे। दरबार में सन्नाटा छा गया। दशरथ की दशा देखकर मंत्री चिंतित थे। पर चुप थे। महर्षि वशिष्ठ शांत थे। इतने में दशरथ काँपकर बेहोश हो गए। होश आया तो डर ने उन्हें फिर जकड़ लिया। मूर्छित होकर दोबारा गिर पड़े। संज्ञा शून्य पड़े रहे।

शब्दार्थ- अचकचा= घबराना, दुविधा= निर्णय न ले पाना, वियोग= शोक/बिछड़ना, सन्नाटा= शांति, मूर्छित= बेहोश।

महर्षि विश्वामित्र का क्रोध बढ़ता जा रहा था। दरबार सशंकित था। किसी अनिष्ट की आशंका से। वे कुछ समझ नहीं पा रहे थे। महर्षि और महाराज के बीच संवाद में कुछ बोलना उचित भी नहीं था। मुनि वशिष्ठ चुपचाप आकर महाराज दशरथ के पास खड़े हो गए। थोड़ी देर बाद दशरथ उठे। स्वयं को संभालते हुए उन्होंने महर्षि से विनती की, "महामुनि! मेरा राम तो अभी सोलह वर्ष का भी नहीं हुआ है। वह राक्षसों से कैसे लड़ेगा? राक्षस मायावी हैं। वह उनका छल कपट कैसे समझेगा? उन्हें कैसे मारेगा? इससे अच्छा तो यही होगा कि आप मेरी सेना ले जाएं। मैं स्वयं आपके साथ चलूं। राक्षसों से युद्ध करूँ।

शब्दार्थ- सशंकित= चिंतित/भयभीत, अनिष्ट= अशुभ, विनती= प्रार्थना, मायावी= असामान्य कार्य करने वाला व्यक्ति।

महर्षि विश्वामित्र ने कोई <u>प्रतिक्रिया</u> व्यक्त नहीं की। क्रोधित थे, पर उसे व्यक्त नहीं कर रहे थे। उन्हें अपने यज्ञ के नियम याद थे। क्रोध करने से यज्ञ <u>खंडित</u> हो जाता। अनुष्ठान अधूरा रह जाता। "मैं राम के बिना नहीं रह सकता, महामुनि! एक पल भी नहीं। आप राम को छोड़कर जो चाहे मांग लें। उसे मत ले जाइए। मैं राम को नहीं दूंगा। बिल्कुल नहीं। वह मेरी बुढ़ापे की संतान है। मैं उससे बहुत प्रेम करता हूँ।" महर्षि का क्रोध <u>भभक</u> उठा। दरबार, मंत्रीगण और ऋषि मुनि <u>सकते</u> में आ गए। "आप रघुकुल की <u>रीति</u> तोड़ रहे हैं, राजन। वचन देकर पीछे हट रहे हैं। यह बर्ताव कुल के विनाश का सूचक है।

<u>शब्दार्थ-</u> प्रतिक्रिया= प्रत्युत्तर, खंडित= टूटना, भभक= आतंरिक क्रोध, सकते= डर/चिंता, रीति= नियम।

आप जानते हैं कि मैं स्वयं दुष्ट राक्षसों का संहार कर सकता था। लेकिन मैंने <u>सन्यास</u> ले लिया है। अगर आप राम को नहीं देंगे तो मैं यहां से खाली हाथ लौट जाऊंगा।” बात बिगड़ती देखकर मुनि वशिष्ठ आगे आए। महाराज दशरथ को समझाया। राम की शक्ति के बारे में। <u>प्रतिज्ञा</u> तोड़ने के संबंध में। महर्षि विश्वामित्र के साथ रहने पर राजकुमार राम को होने वाले लाभ के बारे में। “राजन, आपको अपना वचन पूरा करना चाहिए। रघुकुल की रीति यही है। प्राण देकर भी आपके <u>पूर्वजों</u> ने वचन निभाया है। आप राम की चिंता न करें। महर्षि के होते उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।”

<u>शब्दार्थ-</u> सन्यास= मानव की अवस्था, प्रतिज्ञा= संकल्प, पूर्वजों= पुरखे/अपने से पहले की पीढ़ी।

महाराज दशरथ की चिंता कुछ कम हुई। पर मन अभी भी खिन्न था। पुत्र विछोह का दुख सभी तर्कों पर भारी पड़ रहा था। गुरु वशिष्ठ ने कहा, "महाराज, महर्षि विश्वामित्र सिद्ध पुरुष हैं। तपस्वी हैं। अनेक गुप्त विद्याओं के जानकार हैं। वह कुछ सोचकर ही यहाँ आए हैं। राम उनसे अनेक नई विद्याएँ सीख सकेंगे। आप राम को महर्षि विश्वामित्र के साथ जाने दें। राम को उन्हें सौंप दें।" दशरथ ने मुनि वशिष्ठ की बात दुखी मन से स्वीकार कर ली लेकिन वह राम को अकेले नहीं भेजना चाहते थे। उन्होंने विश्वामित्र से आग्रह किया।

शब्दार्थ- खिन्न= उदास, विछोह= दुःख/विरह, सौंप= समर्पित, आग्रह= निवेदन।

कहा कि वे राम के साथ उनके छोटे भाई लक्ष्मण को भी ले जाएं। महर्षि विश्वामित्र ने महाराज दशरथ का यह आग्रह स्वीकार कर लिया। राम और लक्ष्मण को तत्काल दरबार में बुलाया गया। महाराज दशरथ ने उन्हें अपने निर्णय की सूचना दी। दोनों भाइयों ने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। सिर झुका कर। आदर सहित। इसकी सूचना माता कौशल्या को दी गई। बताया गया कि राम और लक्ष्मण वन जा रहे हैं। महर्षि विश्वामित्र के साथ। नितांत गंभीर माहौल में स्वस्तिवाचन हुआ। शंखध्वनि हुई। नगाड़े बजे। महाराज दशरथ ने भावुक होकर दोनों पुत्रों का मस्तक चूमकर उन्हें महर्षि को सौंप दिया।

शब्दार्थ- तत्काल= तुरंत, सहर्ष= खुशी के साथ, आदर= सम्मान, नितांत= अत्यधिक/असाधारण।

दोनों राजकुमार बिना विलंब किए महर्षि के साथ चल पड़े। बीहड़ और भयानक जंगलों की ओर। विश्वामित्र आगे–आगे चल रहे थे। राम उनके पीछे थे। लक्ष्मण राम से दो कदम पीछे। अपने धनुष संभाले हुए। पीठ पर तुणीर बांधे। कमर में तलवारें लटकाए।

शब्दार्थ- विलंब= देर, बीहड़= ऊबड़-खाबड़ भूमि, भयानक= डरावना, तुणीर= बाण रखने का यंत्र।

प्रश्नोत्तर भाग-2

प्रश्न-1 महर्षि विश्वामित्र राजा दशरथ के पास राजकुमार राम को क्यों मांगने आए थे?

उत्तर- महर्षि विश्वामित्र राजा दशरथ के पास राजकुमार राम को मांगने आए थे क्योंकि दो राक्षस उनके यज्ञ में बाधा डाल रहे थे।

प्रश्न-2 सन्यास लेने से पूर्व विश्वामित्र कौन थे?

उत्तर- सन्यास लेने से पूर्व विश्वामित्र एक बड़े और बलशाली राजा थे।

प्रश्न-3 महर्षि विश्वामित्र जो यज्ञ कर रहे थे वह कितने दिन का था?

उत्तर- महर्षि विश्वामित्र जो यज्ञ कर रहे थे वह दस दिन का था।

प्रश्न-4 पठित कथा के अनुसार उस समय राम की उम्र कितनी थी?

उत्तर- पठित कथा के अनुसार उस समय राम की उम्र सोलह वर्ष थी।

प्रश्न-5 राजा दशरथ क्यों दुखी हो गए?

उत्तर- राजा दशरथ महर्षि विश्वामित्र के द्वारा राजकुमार राम को यज्ञ की रक्षा के लिए मांगने पर दुखी हो गए।

प्रश्न-6 महर्षि विश्वामित्र ने अपना क्रोध व्यक्त क्यों नहीं किया?

उत्तर- महर्षि विश्वामित्र ने अपना क्रोध व्यक्त इसलिए नहीं किया क्योंकि क्रोध करने से उनका यज्ञ खंडित हो जाता।

प्रश्न-7 महर्षि वशिष्ठ ने राजा दशरथ को क्या समझाया?

उत्तर- महर्षि वशिष्ठ ने राजा दशरथ को राम की शक्ति के बारे में, प्रतिज्ञा तोड़ने के बारे में और उनके साथ रहने पर राम को होने वाले लाभ के बारे में समझाया।

प्रश्न-8 रघुकुल की क्या रीति थी?

उत्तर - रघुकुल की रीति थी कि वचन का पालन प्राण देकर भी करना चाहिए।

प्रश्न-9 दशरथ ने राम के साथ और किसे ले जाने का आग्रह किया?

उत्तर - दशरथ ने राम के साथ लक्ष्मण को भी ले जाने का आग्रह किया।

प्रश्न-10 महर्षि विश्वामित्र के आश्रम का क्या नाम था?

उत्तर- महर्षि विश्वामित्र के आश्रम का नाम सिद्धाश्रम था।

प्रश्न-11 महर्षि विश्वामित्र राम के साथ और किसे अपने साथ ले गए?

उत्तर - महर्षि विश्वामित्र राम के साथ छोटे भाई लक्ष्मण को भी अपने साथ ले गए।

प्रश्न-12 राजा दशरथ की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर - राजा दशरथ कुशल योद्धा, प्रजा पालक और न्यायप्रिय शासक थे।

धन्यवाद